भगवत् कृपा

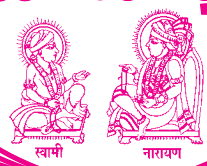

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ।। शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 36 अंक : 4	10.7.2013 बुधवार (जुलाई - अगस्त)	शुल्क – प्रति अंक : ₹ 10.00 वार्षिक : ₹ 50.00

सद्गुरु क्या मिले 'भगवान' मिल गए, जीवन का ढंग बदला...

22 जुलाई – गुरुपूर्णिमा

20 अगस्त – रक्षाबंधन

और

1 सिंतबर – ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज की जयंती

जैसे प्रार्थना के पर्व जब द्वार पर आहट दे रहे हों, तब सहज ही मुक्तों के अंतर से उद्गार फिसल जाते हैं –

अब गुरु की याद में हर पल हमारी गुज़रती है...

स्वामिनारायण के आश्रित मुक्त तो इन तीनों पर्वों पर केवल प्रार्थना ही नहीं, बल्कि अपने आपको भीतर से टटोल कर अंतर्दृष्टि करें –

हमने गुरुदेव की मरजी में ही रहने की कितनी टेक रखी; ताकि गुरु का सच्चा पूजन करके, जन्मोंजन्म से जोंक की भाँति चिपके इंद्रियों-अंतःकरण के भावों से छुटकारा पाने के लिए शाश्वत् रक्षा प्राप्त कर लें।

गुणातीत स्वरूप ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज और ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज ने अपने इष्टदेव ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज एवं ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की मन, कर्म और वचन से न केवल सेवा की; वरन् उन्हें वश कर लिया और... खुद गुणातीत स्थिति पाने के बावजूद भी गुरु के प्रति अपना स्वामीसेवकभाव कभी भी खंडित नहीं होने दिया। ऐसी गुणातीत विभूतियों के जीवन के प्रसंगों से प्रेरणा पाकर, **'गुणातीत ज्योत'** से बने भजन की यह पंक्ति –

बोलिए के मानीए तेने दे ज़ीरो मारक,
वर्ते के रुचि राखे तेने करे मूर्ति धारक...

का जब भी स्मरण होता है, तब हमारे भीतर का तंत्र इस ओर अग्रसर होने के लिए मुस्तैद तो हो जाता है, लेकिन पूर्ण तैयारी न होने के कारण और जीव की कमज़ोरी के कारण, प्रसंग पर हम अपना निशान चूक जाते हैं। फिर, प्रगट प्रभु की कही बातों को भूल कर अपने पुराने रवैये से कब चलने लगते हैं, उसका खुद को भी ख्याल नहीं पड़ता।

पर, हम खूब भाग्यशाली हैं कि हमें हमेशा जाग्रत करने के लिए समय-समय पर गुणातीत स्वरूपों ने अपनी परावाणी या लिखित आशीर्वादों द्वारा हमारी प्रगति कराने के लिए निरंतर उद्यम किया है।

'पत्र संजीवनी' में गुरुपूर्णिमा के अवसर पर **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** द्वारा लिखे निम्न आशीर्वाद उनकी भाँति आज भी वैसे के वैसे प्रगट हैं। तो, ***जब जागे, तभी सवेरा...*** इस उक्ति के अनुसार आशीर्वाद पत्र के प्रत्येक शब्द की गहराई को समझते हुए **12, 13, 14 अगस्त 2013** पेरिस में मनाए जा रहे **'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' – प्रथम चरण** के वर्ष में **सच्चा गुरु पूजन करें** और **सच्चा रक्षाकवच** प्राप्त करें।

स्वामिश्रीजी

79 वेम्बली
लंडन 1.7.77
गुरुपूर्णिमा - शुभदिन

देश-विदेश में इस शुभ दिन सभी अपने-अपने इष्टदेव और गुरु का प्रेमभाव से पूजन करते हैं।
पवित्रभाव से अर्घ्य अर्पण करते हैं।
लेकिन, सच्चे सद्गुरु मुश्किल से (बहुत कम) मिलते हैं
व
मिलने के बावजूद माने नहीं जाते।
माने जाएँ, पर पहचाने नहीं जाते।
यह भी हो जाए, फिर भी **जैसे हैं वैसे तत्त्व से**
परब्रह्म **पुरुषोत्तम नारायण** और **गुणातीत ब्रह्मस्वरूप संत** को पहचान नहीं पाएँगे
तथा
उनका अभिप्राय समझ नहीं पाएँगे।
यहाँ **सत्पुरुष की कृपादृष्टि और प्रसन्नता प्राप्त करना अनिवार्य है।**
सूर्य समान **'दया'** सभी पर होती है, लेकिन **'कृपा'** अनन्यभाव से जुड़ने पर ही होती है।
सो, सम्यक् समर्पण से अतंर की प्रसन्नता मिले ऐसी अभीप्सा रख कर,
प्रसन्नता का पात्र बनने के लिए दिल और श्रद्धा से प्रार्थना करें, वही सद्गुरु पूजन है।

जीव के ब्रह्मरूप होने पर ही परब्रह्म उसकी सेवा अंगीकार करते हैं
और
संत के वचन से, महिमा एवं निर्दोषभाव युक्त सेवा करने से,
हम आज्ञास्वरूप में से अनुवृत्तिस्वरूप में जा सकते हैं।
तत्पश्चात् जब हम संबंध वाले मुक्तों–**कम से कम दो साधु एवं चार भगवदी**–के साथ
आत्मबुद्धि तथा प्रीति–अंत्य. 11[1] के मुताबिक दृढ़ करें,
तब **अति बड़े परम एकांतिकों की कृपादृष्टि होती है और अंतर की प्रसन्नता प्राप्त होती है।**
यहाँ किसी भी प्रकार का अंतराय–पर्दा नहीं होना चाहिए।
वर्ना तो हम सिद्ध हो पाएंगे, मंडलधारी बन पाएँगे, संस्थाएँ स्थापित होंगी और सोने के मंदिर बनवा देंगे
व
हज़ारों को सत्संग भी कराएँगे एवं ऐश्वर्य-प्रताप वैभवशाली साधन संपन्न सिद्ध भी बन जाएँगे...
किन्तु, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी और गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज तथा संतवर्य योगीजी महाराज ने बार-बार भारपूर्वक बताया है कि **'एक' अंक के बिना के 'शून्य' जैसा यह बड़प्पन मिथ्या है।**
क्योंकि हमारा मन सत्संगी नहीं हुआ!
हमारा जीव (पू. अ. महामुक्त भगतजी महाराज ने माँगा) ही यदि सत्संगी नहीं हुआ, तो फिर क्या पाया?
साधन मात्र से अभिमान बढ़ेगा। सो, दुर्लभ से भी दुर्लभ **एकांतिकभाव–**
प्रत्यक्षस्वरूप की प्रसन्नता के पात्र बन कर, मन और चित्त को सद्भावना से निर्वासनिक बना कर,

---

[1] **अंत्य. 11**–अपनी देह के प्रति जैसी आत्मबुद्धि और दृढ़ प्रीति रहती है, वैसी ही यदि भगवान व भगवान के भक्त के प्रति रहे, तो जैसी शांति निर्विकल्प समाधि में रहती है, वैसी उस समाधि के बिना भी हमेशा रहा करे।

जीतेजी ही सिद्ध कर लेना, ताकि मूल अज्ञान टले और मूल प्रकृति दिव्य बने

और

अक्षरधाम का ही दिव्य सुख-शांति-बल और आनंद सदैव प्राप्त हो एवं अन्यों को भी सहज ही प्राप्त हो।

इस हेतु सच्चे सद्‌गुरु का सर्वस्वभाव और समर्पण से पूजन-स्तवन करना।

देवरूप बन कर देव का पूजन करें, तो ही वो पहुँचता है।

अब तक हमने अनेकों गुरुपूर्णिमा मनाई होंगी, फिर भी जो मिलना चाहिए वो परिणाम आया नहीं।

तो अब की बार पहल करें

और

पुरानी ग्रंथि–मनमुखी मान्यता की परिधि से तत्काल कूद कर-छलांग लगा कर,

उस दायरे से-प्रकृतिपुरुष के चक्कर से निकल कर,

सद्‌गुरुकृपा से ही, उनके संकल्प से–

अखंड अक्षरधाम में ही दोनों पाँव से–(स्वामी की बात प्रकरण 3 की 26)[2] इस क्षण से रहने लगें।

इसमें **अंत्य. 26,[3] प्र. 24,[4] मध्य 25,[5] प्र. 76[6] के अंतिम परिच्छेद (पैरा) के अनुसार**

बालक की–**निर्दोष बच्चे की-प्रार्थना ही काम करेगी**

और

यदि वह प्रार्थना न पहुँचे तो या तो तुम बनावटी, झूठे और मन के कपटी हो,

या

फिर गुरुजी पहुँचे हुए ही नहीं होंगे और खामखाह सद्‌गुरु पद का आग्रह रखते होंगे।

ऐसे गुरु को छोड़ देना चाहिए।

भले पाँव छूना, लेकिन पूजन करके समागम नहीं करना।

हमें तो परमसत्यस्वरूप सच्चे सद्‌गुरु पू. योगीजी महाराज मिले-माने-पहचाने???

तो उनके धारक बन कर, सुहृद्‌भाव-मैत्रीभाव से-संबंधवाले में निर्दोषबुद्धि रख कर

उनकी (गुरु) ओर दृष्टि रख कर, उनकी प्रेरणा-पसंद के मुताबिक वर्ता करें,

वही सच्चा गुरुपूजन!

सभी को ऐसी सूझ प्राप्त हो–यही अभ्यर्थना।

---

[2] **स्वा.बात 3 की 26**– वर्तमान काल में आज जिसने जन्म लिया है, उसका तो एक पाँव अक्षरधाम में है और जिसने इस साधु से पहचान कर ली है, उसके तो दोनों पाँव अक्षरधाम में ही हैं; लेकिन जिसे इस बात का ज्ञान नहीं, उसे यह बात समझ नहीं आएगी। और इस सत्संग में तो अनंत प्रह्लाद और अनंत अंबरीष एवं पर्वतभाई जैसे अनंत हैं, लेकिन साधु के समागम के बिना ज्ञान होता नहीं तथा ज्ञान के बिना ऐसी महिमा होती नहीं एवं महिमा जाने बिना सुखी हो नहीं सकते, इसमें कोई संशय नहीं।

[3] **अंत्य. 26**– जो भगवान की महिमा यथार्थ समझता हो और अपनी आत्मा को देह से पृथक जान कर; ब्रह्मरूप मानते हुए धर्म की दृढ़ता से भगवान की अचल भक्ति करता हो, तब भी सत्संग में जो कुछ न समझता हो, लेकिन भगवान का निश्चय तो हो, उसे बड़ा समझे और उसकी अपेक्षा स्वयं को अतितुच्छ जाने और अपनी बातों में अपनी समझ की मस्ती किसी के सामने ज़ाहिर न करे–ऐसा जो हो, वह मुझे बहुत पसंद आता है।

[4] **प्र. 24**– जिसका मन स्थिर हुआ है और भगवान का निश्चय भी अतिशय दृढ़ है, फिर भी हृदय में अतिशय आनंद आता नहीं कि 'मैं धन्य-कृतार्थ हुआ हूँ; जबकि इस संसार में अन्य जीव तो काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, आशा, तृष्णा से परेशान होकर त्रिविध ताप में रात-दिन जलते रहते हैं और... मुझे तो **प्रगट पुरुषोत्तम ने करुणा करके** अपने स्वरूप की पहचान कराई है और कामक्रोधादि सभी विकारों से रहित किया है, साथ ही नारद-सनकादिक जैसे संत के समागम में रखा है, सो मेरा बड़ा भाग्य है।' यदि ऐसा विचार नहीं करता और आठों प्रहर अतिशय आनंद में नहीं रह पाता, वह बड़ी खामी है। जैसे 'बालक के हाथ में चिंतामणि दे दिया हो, उसे उसकी महत्ता नहीं होती, सो उसे उसका आनंद नहीं आता,' इसी प्रकार भगवान पुरुषोत्तम मिले हैं और उसका अंतर में आठों प्रहर क़ैफ रहता नहीं कि 'मैं पूर्णकाम हो गया हूँ'–ऐसा जो नहीं समझता, उस हरिभक्त में बड़ी कमी है और जब किसी हरिभक्त का दोष दिखाई दे, तब ऐसा समझना कि 'उसका स्वभाव तो सत्संग के योग्य नहीं है, फिर भी

(चालु-पृ. 4)

इसे जो सत्संग मिला है और वह भले ही ऐसा-वैसा है, तो भी सत्संग में यदि पड़ा रहा है, तो वह उसका पूर्वजन्म का या इस जन्म का भारी संस्कार है, तभी ऐसा सत्संग मिला है' – ऐसा समझ कर उसका भी अतिशय गुण लेना।

[5] **मध्य 25** – जब घर में एक मन अन्न की आमदनी हो, तब संत के प्रति जैसी प्रीति व दीनभाव हो, पर फिर उसे एक गाँव का राज्य मिले या पाँच गाँव का राज्य मिले या पचास गाँव का राज्य मिले या सौ गाँव का राज्य मिले या पूरी पृथ्वी का राज्य मिले, तब भी संत के सम्मुख पहले जैसे कंगाल और दीन आधीन था, वैसे का वैसा ही प्रीति युक्त दीन आधीन रहे एवं इंद्रलोक व ब्रह्मलोक का राज्य पाए तो भी संत के आगे वैसे का वैसा ही दीन आधीन रहे। जो त्यागी हो और वह शुरुआत में दीन बन कर जिस प्रकार सभी संतों की सेवा-चाकरी करता हो, उसी प्रकार स्वयं में भगवान जैसा ऐश्वर्य आने पर भी करता रहे और साधु के साथ हक़-दावा न रखें और उनकी बराबरी न करे, ऐसे जिसके लक्षण हों, उस पर भगवान अति प्रसन्न होते हैं।

[6] **प्र. 76** – जिसे पंच वर्तमान में किसी भी प्रकार की खोट न हो और भले ही कैसी भी कसनी में लें और उसकी पसंद छुड़वा कर हमारी मरजी में रखें, तब भी वह देहपर्यंत उदास न हो, वह पक्का सत्संगी है और ऐसे हरिभक्त पर हमें अपने आप सहज ही प्यार उमड़ता है। पर, जिसमें ऐसे गुण न हों, तो ऐसे पर प्रेम बरसाना भी चाहें, तो भी होता नहीं और हमारी प्रकृति तो ऐसी है कि जिसके हृदय में भगवान की ऐसी परिपूर्ण भक्ति हो, उसी से लगाव होता है।

✡✡✡

अनुष्ठान शिविर...

दिल्ली मंदिर के वडील **प.भ. मल्कानी अंकल**, पिछले वर्ष ही मसूरी शिविर द्वारा निजीतौर पर जुड़े **प.भ. गौरव गर्गजी** एवं उनकी पत्नी **सौ. सुचिका भाभी**, मुबंई के प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी की पत्नी **सौ. डॉली दीदी** तथा प.भ. योगेशभाई जानी के नवविवाहित पुत्र-पुत्रवधु **प.भ. सिद्धार्थ जानी – सौ. लवीना** ने अबकी बार **15 मई – 2013** की सायं करीब 7:00 बजे दीप प्रज्ज्वलित करके **'अनुष्ठान शिविर'** की शुरुआत की।

सर्वप्रथम 'अनुष्ठान - धुन' का माहात्म्य समझाते हुए **प.पू. गुरुजी** ने बात की –

*शास्त्रों में कहा जाता है कि **'अनुष्ठान' करो।** जो अपने यहाँ **काकाजी ने प्रचलित करवाया।** खूब भजन करने के बाद भी हमारी चाही कोई चीज या बात न बनती हो और हम उसका हल चाहते हों, तब काकाजी कहते – 'अनुष्ठान करो।' अनुष्ठान में कम से कम बीस मिनिट धुन करो। पर, हमारे मन का कॉन्सन्ट्रेशन 'डालडा घी' जैसा है; सो हम रोज़ चालीस मिनिट धुन करेंगे। ताकि टोटल 20 – 25 मिनिट तो मन से धुन हो पाए।*

*दूसरी बात – **पप्पाजी** सबको इकट्ठा करके **'संघ ध्यान'** करवाते थे और **काकाजी** भी सबको इकट्ठा करके **'फिक्स्ड टाईम धुन'** करवाते थे। उनका कहना था कि रोज़ एक ही समय पर कॉल लगाओ, तो भगवान भी तुम्हारे कॉल की राह देखते हैं...*

हमारे विचार - संकल्प - प्रार्थना को दूर तक पहुँचाने की सक्षमता पानी में सर्वाधिक है, ऐसा जापान के एक वैज्ञानिक डॉ. मॅसेरो इमोटो ने अनुभव किया है। सो, प.भ. राकेशभाई से निम्न प्रसंग पढ़वाए और **'स्वामिनारायण मंत्र'** की महिमा बता कर प.पू. गुरुजी ने धुन का प्रारंभ करवाया।

⁕ **एक** बार मैंने एक धर्मात्मा को देखा था, जिनकी प्रार्थना से विशाल जलाशय के पानी में बदलाव आ गया था। मुझे ज्ञात हुआ कि जापान के बौद्ध थियोसॉफ़ी मंदिर के मुख्य पादरी होकी कॅटो गुनामा प्रीफेक्चर के फ्यूज़ीवाळा डॅम पर प्रार्थना कर चुके थे। ऐसी प्रार्थना वे कई बार कर चुके थे।

इस विषय में मैं बहुत उत्सुक था, सो मैंने फाधर कॅटो से कहा कि अब अगली बार जब वे ऐसी प्रार्थना करेंगे, तो मैं अवश्य उनके साथ चलूँगा।

उनकी प्रार्थना की शुरुआत होने से पहले हमने जलाशय का थोड़ा पानी एकत्रित किया और अलग से रख दिया। फाधर कॅटो ने प्रार्थना करनी शुरु की और अपने आसपास अत्यंत प्रभावशाली वातावरण उत्पन्न करते हुए वे एक घंटे तक प्रार्थना करते रहे।

प्रार्थना समाप्त होने के बाद, मैंने पंद्रह मिनिट उनकी बातें सुनीं। मेरे साथ अन्य जो लोग मौजूद थे, वे कहने लगे– *'अरे! देखो, जलाशय के पानी का रंग यकायक बदलने लगा है!'*

वाकई, इस विशाल जलाशय का पानी साफ होने लगा था। प्रार्थना से पूर्व उसमें कोई प्रतिबिंब दिखाई नहीं दे रहा था, क्योंकि वह मटमैला था। अब आसपास के पेड़ों का प्रतिबिंब भी उसमें भलीभाँति दिखने लगा। जापानी भाषा में जिसे 'कोटोडोमा' (अंतर की पुकार) कहते हैं, फाधर कॅटो की पुकार में जरूर ऐसा ज़ज़्बा होगा। प्रार्थना की ताक़त को मैंने अपनी आँखों से हुबहू देखा।

प्रार्थना के बाद पानी में समाविष्ट स्फटिक का चित्र खींचने के लिए हम वहाँ से थोड़ा पानी टोक्यो लेकर गए। प्रार्थना से पूर्व एकत्रित किए गए पानी में कोई भी स्फटिक नहीं पड़ा था, जबकि प्रार्थना के उपरांत एकत्रित पानी में काफी बड़े अतिशय शुद्ध-सुंदर षड्भुज स्फटिक बन गए!

इस ब्रह्मांड में मनुष्य ही केवल ऐसा प्राणी है, जो **शब्दों के माध्यम से** अपने अंतर की भावनाओं को तत्काल, कहीं और किसी भी प्रकार प्रकट करने की क्षमता रखता है। हमारे शब्द और विचार **कहीं भी-किसी के भी पास तत्काल** पहुँच सकते हैं।

* एक बार मैंने भी निम्न प्रयोग किया। टोक्यो में स्थित मेरे कार्यालय के नल से साधारण पानी एक मर्तबान में भर कर अपनी मेज़ पर रखा। चूँकि यह शहर में सब जगह वितरित होने वाला क्लोरीनयुक्त पानी था, सो उसमें स्फटिक बनाने के प्रयास विफल रहे।

फिर मैंने जापान में रहने वाले पाँच सौ व्यक्तियों से एक मदद के लिए कहा। **एक निश्चित दिन पर सभी ने एक साथ**, पानी को शुद्ध करने वाले विचार भेजे और फिर 'धन्यवाद' का संदेश भेजा।

जैसे कि अनुमानित था, उसके मुताबिक़ पानी में बदलाव आ गया और उसमें सुंदर स्फटिक बनने लगे। नल का क्लोरीनयुक्त पानी शुद्ध जल में परिवर्तित हो गया!

यह भला कैसे हुआ होगा? मेरे ख्याल से आपको उत्तर मिल गया होगा। पाँच सौ लोगों के **एक साथ** विचार और शब्द समय व सीमा का पाबंद न रहते हुए, बिना किसी ज़रिये ही पानी तक पहुँच गए।

पानी हमारे विचारों और प्रार्थनाओं को संजोए रखता है। जैसे कि तुम में भी जल का अंश निहित है, सो **तुम कहीं भी होओगे, लेकिन तुम्हारी प्रार्थना लक्ष्य तक पहुँचेगी ही।** प्रार्थना में इतनी ताक़त है कि वह अवकाश और समय की दूरी को पार कर सकती है।

ऐसे सच का ज़ाहिर होना सचमुच आश्चर्यजनक, अद्‌भुत और विश्वासप्रद है। इससे मुझे एहसास हुआ कि **प्राचीन शिक्षाएँ, प्रार्थना और धर्म की बातें कोई अंधविश्वास और बेतुके विचार नहीं हैं, वरन् ब्रह्मांड के सत्य पर आधारित है।**

और... इसी हेतु अबकी बार प.पू. गुरुजी ने पूरे एक महीने लगातार श्री ठाकुरजी के समक्ष तुलसी पत्र डलवा कर पानी के दो कटोरे रखवाए और आशीर्वाद देते हुए बोले –

रोज़ फिक्स्ड टाइम पर चालीस मिनिट धुन करेंगे, तो यह पानी में कितनी पावर जनरेट हो जाएगी।

सभा के पश्चात् प्रसादी का वह जल 'आचमन' के रूप में सभी को रोज़ दिया गया।

पूरे एक महीने **'स्वामी की बातों'** का पाठ करवाते हुए, प.पू. गुरुजी ने व्यावहारिक व आध्यात्मिक सभी प्रकार की मर्मभरी सूझ सबको दी। शिविर के अंतिम दो दिन पवई की **'अक्षरधाम'** पत्रिका में से **ब्रह्मस्वरुप काकाजी महाराज** के प्रेरणादायी प्रसंगों का हार्द समझाते हुए, **12 जून - 2013** उनके **95वें प्राकट्योत्सव** के मंगलकारी दिन अनुष्ठान शिविर की पूर्णाहुति कराई।

पूर्णाहुति से तीन - चार दिन पूर्व अनोखी स्मृति देते हुए प.पू. गुरुजी बार - बार कहते कि *बस, अब तो तीन दिन बाकी रहे... बस अब दो दिन बाकी रहे।* ऐसा सुन कर दिल्ली मंदिर से जुड़े **प.भ. राजेन्द्र जैनजी** के संबंध से नए ही संपर्क में आए **प.भ. देवेशजी** बोल उठे –

गुरुजी कह रहे हैं कि दो दिन रह गए, सुहृद्स्वामी भी कहते रहते हैं कि दो दिन रह गए। तो क्या शिविर के बाद मंदिर का गेट बंद कर दोगे?

प.भ. देवेशजी ने जिस ढंग से यह बात की, उसमें उनका खूब अपनापन निहित था। पूर्व के मुक्त होने की यही तो निशानी है। दूसरी ओर – हम जो इस मंदिर से, ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज एवं प.पू. गुरुजी से निजीतौर पर इतने सालों से जुड़े हुए हैं, उनके लिए खूब धन्यता महसूस करने की बात है कि बिना किसी परिश्रम के ऐसी गुणातीत विभूतियों का हमें जोग हो गया!

{ प.पू. गुरुजी ने गुरुहरि योगीजी महाराज, ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज एवं गुणातीत स्वरूपों से समय - समय पर जो कुछ भी पाया, वह मानो दिल खोल कर 'अनुष्ठान शिविर' के दौरान मुक्तों पर उड़ेल दिया। उसका लाभ आगामी 'भगवत् कृपा' से 'श्रवण, मनन, निदिध्यासन' के अंतर्गत ले पाएँगे। }

6 मार्च, 2013 ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के स्वधामगमन दिन की पूर्व संध्या पर

पू. ब्रह्मानंदस्वामी (सांकरदा)

...**अक्षरविहारीस्वामी** के साथ हम कई सालों से रहते हैं। सभी स्वरूपों ने उन्हें माहात्म्य सम्राट कह कर नवाज़ा है... उन्हों**ने हमें भी एक ही चीज सिखाई कि सभी की माहात्म्ययुक्त सेवा करो।** सांकरदा के संत या जुड़े हुए भक्तों को प्रवचन करना, कथा करनी नहीं आता है। लेकिन स्वामिजी जो बोले या यहाँ हमारे गुरुजी जो बोलते हैं कि यह करना है, तो बस वो करने सब लग जाते हैं। उसमें कोई पीछे नहीं हटता। स्वामिजी से हमने बहुत कुछ पाया और सीखा है। वे कई बार कहते हैं कि आप लोगों को कुछ नहीं करना है। लेकिन हमारा मन तर्क-वितर्क करता है कि कुछ नहीं करेंगे, तो हमारा विकास कैसे होगा? वे कहते हैं कि एक ही काम करना कि **जो सत्पुरुष और गुणातीत पुरुष तुम्हें मिले हैं, उन्हें कभी 'ना' नहीं कहना। उसमें सब साधना आ गई। यदि हम 'ना' कहते हैं, तो इसका अर्थ यह है कि हम उन्हें मानते नहीं और सिर्फ दिखावा करते हैं कि आप बहुत बड़े हैं**; आज गुरुजी के सान्निध्य में तिथि के मुताबिक स्वामिजी का प्रागट्य दिन मनाने का अवसर मिला है।

...एक ही प्रार्थना करनी है कि पूरा गुणातीत समाज एक वृक्ष बनकर रहे। वृक्ष की शाखाएं अलग-अलग होती हैं; लेकिन वह जब बड़ा होता है, तो सबको छाया और ठंडक देता है। सभी सत्पुरुष हमें यही कराने के लिए लगे हुए हैं कि गुणातीत पुरुषों में से जो आए और वे जो लेकर चले हैं, उसमें जुट जाओ।

जैसे कि गुरुजी ने बताया कि समय अब करवट बदल रहा है, कुछ नया हो रहा है। नया यह हो रहा है कि गुणातीत समाज के सब केन्द्रों में अब काकाजी और पप्पाजी का जो संकल्प था, योगीजी महाराज का जो संकल्प था, वो अब पूर्ण होने जा रहा है, उसमें प्रगति हो रही है। गुरुजी हर साल संतों को बुलाते हैं, सारे समाज को बुलाते हैं और ऐसा उत्सव कराते हैं। कई बार विचार आते हैं कि इतना बड़ा खर्चा करने की क्या जरूरत होती है? पर, वो हमारी बुद्धि से परे की बात है। क्या पाया और उसने क्या दिया वो कोई दिखाने की और देखने की बात नहीं है। तो, आज गुरुजी और अक्षरविहारीस्वामिजी के चरणों में एक ही प्रार्थना है कि **हम कभी भी मानसिक गिनतियाँ न करें। हमारा तंत्र कैसा भी हो लेकिन आप लोग जो मिशन लेकर बैठे हैं, उसमें हम अपने इंद्रियों, अंतःकरण और सभी तंत्र से आपको साथ दें यही प्रार्थना।**

7 मार्च, 2013 ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के स्वधामगमन दिन पर

पू. इलेशभाई (विद्यानगर)

...काकाजी का ये 28वां स्वधामगमन दिन–स्मृति दिन। उनका हम पर जो ऋण है, उसे चुकाने के लिए गुरुजी हमें रास्ता दिखा रहे हैं। पूरे गुणातीत समाज के संतों, बहनों, हमारे जैसे व्रतधारी भाइयों और गृहस्थों के लिए काकाजी व पप्पाजी ने बहुत ही सहन करके ऐसा राजमार्ग हमारे लिए खुल्ला कर दिया। जो काँटे थे वो सब निकल गए और फूलों के मार्ग पर हम चल रहे हों, ऐसा महसूस कर रहे हैं। **काकाजी और पप्पाजी दोनों का सूत्र था–'आनंद करो'।** शायद वर्ष 1965 की बात है, जब मैं 9 साल का था। घर में स्वामिनारायण का कुछ सत्संग नहीं था... पर, मेरे अंकल डॉ. सनदभाई जो साहेब के साथ शुरुआत के 8 भाइयों में से एक हैं, वे जुड़ गए थे... तब हरिप्रसादस्वामिजी प्रभुदास के रूप में थे... उन्होंने मुझे दूर से बताते हुए कहा– *ये जो अंकल जा रहे हैं, उन्हें बोलना कि मुझे प्रार्थना लिख कर दो...* वे बापा के सेक्रेटरी थे, तो बाद में गोंडल मंदिर के लेटर पॅड पर उन्होंने मुझे एक प्रार्थना लिख कर दी थी।

...काकाजी जहाँ भी शिविर कराते या विद्यानगर आते तब मैं उनके पास जाता था। वे कहते– *चलो प्रार्थना बोलो।* एक बार काकाजी विद्यानगर–प्रभुकृपा में बैठे हुए थे और थोड़े हरिभक्त बैठे हुए थे, पप्पाजी भी वहीं मौजूद थे और मैं जाकर नीचे बैठा। काकाजी बोले– *वो प्रार्थना बोलो।* पर, यह प्रार्थना बोलने से पहले **काकाजी ने बोलना शुरू करवाया– *'आनंद करो भई, आनंद करो'*।** तब से प्रार्थना बोलने से पहले बोलता हूँ– *आनंद करो भई, आनंद करो।* सो, मुझे यह याद आया कि काकाजी और पप्पाजी का यह ब्रह्मसूत्र था–आनंद करो भई आनंद करो। इन स्वरूपों के साथ हमारा ऐसा संबंध हो गया है। **पप्पाजी एक ही बात दोहराते थे–कैसे भी बस भगवान में मन पिरोए रखना है।** तो, उसकी प्रेक्टिस **गुरुजी ने** हमें 24 घंटे कराई और यह शुरू करवाने से पहले सामने से माइक मंगवा कर एक ही **बात कही** कि **हम सबका कुटुंबभाव दृढ़ बने।** तो, मैंने जितनी भी परिक्रमा की, यही प्रार्थना करता रहा कि हमारे पूरे गुणातीत समाज में कुटुंबभावना दृढ़ होती रहे, होती रहे, होती रहे। **जैसे कुटुंब में हम एक-दूसरे का कैसे सह लेते हैं, चला लेते हैं वैसे ही हम जिनके साथ रहते हैं, उसके स्वभाव और प्रकृति को जँचाएँ और धीरे-धीरे ऐसा कुटुंबभाव बनता रहे। गुरुजी का एक ध्येय है गुणातीत समाज के हमारे सभी केन्द्र दिन-प्रतिदिन एक-दूसरे के नज़दीक आएं।** भले ही वो अलग-अलग स्वरूप से जुड़े हों, लेकिन एक ऐसी कुटुंबभावना हम सब में दृढ़ हो और गुरुजी का संकल्प काकाजी, पप्पाजी और स्वामिजी पूरा करेंगे ही। तो, उसमें हम हमारी ओर से साथ देते रहें, ऐसा हम सभी को बहुत बल दें...

पू. विज्ञानस्वामिजी (कंथारिया)

हम सब आज आनंद करने के लिए एकत्रित हुए हैं। जो भी गुरुजी हमसे करा रहे हैं, उन्हें उम्मीद है कि हम सब खुश रहें और आनंद करें। आनंद कराते हुए वे सबके अंदर बैठ जाएँगे। योगीजी महाराज एक ऐसे संत आए कि जिन्होंने सबकी समाधि बंद करवा दी। शास्त्रीजी महाराज के समय में समाधि प्रकरण बहुत चला। मगर योगीजी महाराज ने सबकी बंद करवा दी। हम सब पर स्पेशल ग्रेस की कि काकाजी को समाधि करवाई और वो भी 72 घंटे की करवाई और हमारे लिए **काकाजी ने अपना सब छोड़ दिया। उन्हें जो भी दर्शन हुआ, जो भी शक्ति थी हम सब में बांट दी। खुद का बलिदान दे दिया। खुद के लिए कुछ नहीं किया।** उनकी कृपा यह है कि **उन्होंने सब के लिए एक वारिसदार तैयार किया। गुरुजी की हम सब को भेंट**

मिली। शुरुआत में (गुरुजी को) जब (दिल्ली) आना हुआ, तब यहां बहुत कठिनाई थी। आज यह सब महल जैसा माहौल है, उस समय नहीं था। **गुरुजी ने जो ज़हमत उठाई है, उसका ऋण हम लोग कभी चुका नहीं सकते हैं...**

एक बार पप्पाजी सांकरदा आए थे, तब हम दो-पांच जने और कुछ संत लोग बैठे थे। मैंने पप्पाजी से कहा– *पप्पाजी, आप ताड़देव की अपनी कुछ बातें बताइये न।* तब पप्पाजी बोले – *आज आप में से कोई ऐसा नहीं है जो ये बातें मान भी सके कि कितनी कठिनाई होगी।* उस कठिनाई में से जो गुज़रे, उनमें से ज्योतिबेन और अपने गुरुजी हैं कि जिनके द्वारा कठिनाई की थोड़ी-सी झांकी मिलेगी।

...काकाजी ने खुद के लिए कभी भी संकल्प नहीं किया। उनका खुद का अस्तित्व ही नहीं था। योगीजी महाराज का जो संकल्प था कि अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की प्रतिमा दिल्ली में पधरानी है, उसके पात्र के चुनाव में गुरुजी को पसंद किया। वह हम सबके लिए बड़े भाग्य की बात है। बड़े पुरुष जब संकल्प करते हैं, तब उस समय कुछ मालूम नहीं पड़ता है कि ये क्या करने वाले हैं। शास्त्रीजी महाराज जब 'वड़ताल संस्था' के दरवाज़े से निकले, उस समय किसी को कल्पना भी नहीं होगी कि वे यूँ अक्षरपुरुषोत्तम की निष्ठा का प्रवर्तन करेंगे। योगीजी महाराज भले-भोले, सीधे-साधे साधु, वे ऐसे समाज की रचना करके चैतन्य मंदिर तैयार करेंगे, उसका किसी को इमेजिनेशन भी न हो। ऐसे ही काकाजी, पप्पाजी और बा के द्वारा योगीजी महाराज ने हमें भेंट दी...

दादर मंदिर में गुरुजी ने कई प्रसंगों में आनंद करवाया है। सांकरदा में भी खूब साथ में रहे और यहाँ दिल्ली में भी साथ में रहे। मगर **काकाजी का संकल्प था, जो कि योगीजी महाराज ने कहा था कि अक्षरपुरुषोत्तम की मूर्ति दिल्ली में बिठानी है, आज वो बात गुरुजी के हाथों से संपन्न हुई।** सत्पुरुष जो संकल्प करते हैं, वो बेकार नहीं जाते, उसका आनंद है। ऐसे ही गुरुजी ने सब ज़हमत उठा कर मंदिर बनवाया। भगवान का प्रगटीकरण मूर्ति, तीर्थ और शास्त्र में है या तो सत्पुरुष में है। इसमें से जो एकदम आसान है, वो सत्पुरुष द्वारा है। इनके साथ अपने प्रश्नों के समाधान के लिए हम लोग खुल्ले दिल से बात कर सकें। उनके अंदर भगवान की शक्ति काम कर रही है। शास्त्र के अंदर, तीर्थ के अंदर, मूर्ति के अंदर भगवान विद्यमान हैं, ऐसे ही **भगवानधारक चेपी-चैतन्य के अंदर भगवान की शक्ति काम कर रही है। यूँ इज़ीयस्ट फॉर्म में गुरुजी हमें यहाँ मिल गए हैं। जो हमारे साथ हिलमिल कर रहते हैं, हमें आनंद कराते रहते हैं, मज़ाक करते रहते हैं और हम सभी को खुश रखते हैं।** हमारा बहुत बड़ा भाग्य है कि जो कठिनाई, मुश्किल उन लोगों ने सहीं, उसमें हमें कुछ भी सहना नहीं पड़ा। बस, आनंद करो, आनंद करो, आनंद करो।

...अपने **गुरुजी के साथ खेलो, कूदो आनंद करो भले ही सब कुछ करो, मगर याद रहे कि उनके अंदर भगवान-काकाजी बैठे हैं। उन्होंने सब सत्पुरुषों की प्रसन्नता पाई हुई है और खुद मंदिर बन गए हैं।** काकाजी की प्रसन्नता का कलश उन पर ढल गया। जब मैंने यहाँ के कलश देखे, तो मुझे वही प्रश्न हुआ कि काकाजी ने ये कलश गुरुजी पर ढोल दिया। गुरुजी को हम सब के अंदर कुटुंबभाव की जो उम्मीद है कि सब मिल-जुल कर रहें, हम सब एक हैं–ऐसी भावना से जीएँ... गुरुजी का खुद का कोई संकल्प हो ही नहीं सकता। उनका संकल्प एक ही है कि हम जो भी संकल्प करें वो पूर्ण हो... आज गुरुजी के पास हम ऐसा संकल्प करें कि जो ज़हमत-परिश्रम उठाया है, उनके कुछ पात्र हम बन जाएँ। जिसे देख कर काकाजी, पप्पाजी को खुशी हो, जिसे देखकर योगीजी महाराज, भगवान स्वामिनारायण को खुशी हो...

प.भ. नरेन्द्रजी (जगरांव)

आज काकाजी की पुष्प समाधि की 24 घंटे की परिक्रमा की पूर्णाहुति हुई। इससे पहले यह परिक्रमा 72 घंटे की भी होती थी। जब परिक्रमा की बात चलती है, तब पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, दिल्ली के हरिभक्तों में जोश आ जाता है। हरेक हरिभक्त की तमन्ना होती है कि मैं इस परिक्रमा में हिस्सा लूँ। वास्तव में बात यह है कि यहां जो आता है, उसका बड़ा भाग्य है। हमने कई बार बात की है और कई बार सुनते भी हैं कि इस मंदिर के परिसर में 'ऐरा-गैरा-नत्थू-खैरा' तो यहां आ ही नहीं सकता। यहां पर जो कोई आता है, उस पर प्रभु की-काकाजी की-गुरुजी की विशेष कृपा होती है। पहले, यहां आना कठिन, फिर यहां टिकना कठिन। हम यह जानते हैं जो टिक गया, वो पा गया और जो चला गया, वो रह गया। सो, हमें बहुत ख़ुशी होती है और सबसे बड़ी बात मैं यह सोचता था कि 72 घंटे से ये परिक्रमा 24 घंटे की हो गई। तो ये ब्रेन क्वाँटिटी गिनने लग गया। लेकिन तो फिर भक्ति ने काम किया कि यहां क्वाँटिटी की नहीं, यहां क्वालिटी की बात है। ऊपर महाराज के हॉल में एक वाक्य लिखा हुआ है कि 'आप यहां आए, बस बेफ़्रिक हो जाइए'। तो आपने यहाँ परिक्रमा चाहे 24 घंटे की हो या 72 घंटे की, पर गुरुजी की कृपा से यदि 24 मिनिट भी की है; तो आप पार हो गये, बेफिक्र हो गए। हम परिक्रमा किसकी कर रहे हैं, यह बहुत बड़ी जानने वाली बात है। उस दिव्य पुरुष के हमने दर्शन किए हुए हैं। हमने कोई भक्ति नहीं की; कोई दान नहीं किया, यहां आकर मैंने कोई काम नहीं किया, पर, काकाजी के लिए तो ऐसा है ही नहीं कि यह कम वाला है या यह ज़्यादा वाला है। तो यहां जो विद्यमान हैं, वो महानशक्ति प्रभुधारक हमारे काकाजी महाराज और उनके साथ पप्पाजी महाराज हैं।

पुरानी बात है, पप्पाजी महाराज एक बार लुधियाना गए थे... पप्पाजी कहते–*चाहे हमें भाषा समझ आए या न आए लेकिन एक बात कहता हूँ कि मेरे पास प्रभु हैं।* तो यहां प्रभु बैठे हुए हैं, काकाजी-पप्पाजी हैं और हमारे गुरुजी प्रत्यक्ष बैठे हुए हैं। इन दिनों का हम इंतजार करते हैं कि हम यहाँ कब आ जाएँ। क्योंकि, इससे हमारी बॅटरी री-चार्ज हो जाती है। बहुत साल पहले गुरुजी ने एक बात कही थी कि गुणातीत स्वरूप, संत लैंडलाइन फोन की तरह होते हैं, जिनकी कॉल प्रभु के साथ हमेशा लगती है, क्योंकि उनकी बैटरी-एनर्जी कॉन्स्टन्ट-लगातार चलती है और भगत मोबाइल फोन की तरह है, जिसकी बैटरी चार्ज करनी पड़ती है। कॉल तो उसकी भी लगती है, लेकिन उसे बैटरी चार्ज करनी पड़ती है। तो हम मोबाइल फोन यहां अपने आपको चार्ज करने के लिए आए हैं और लैंडलाइन तो हमारे पास है ही। इमरजन्सी आती है तो हम सिर झुका देते हैं, बात कह देते हैं। कोई परदा, कोई दूरी नहीं और इतना इज़ी कि कहीं से भी गुरुजी–दीदी को फोन लगा लो, समाधान मिल जाता है और काकाजी भी सोल्यूशन दे देते हैं।

एक प्रसंग याद आता है कि 'रियल इसेंस ऑफ तंत्र' के बारे में जब कहा गया कि इतनी बड़ी किताब का मर्म एक सन्टेन्स में क्या है? तो काकाजी ने कहा कि ***आपके पास चाहे 99 गुण हों–100 गुण हों, मगर यदि आप प्रभु से नहीं जुड़े हुए हैं, तो वो ज़ीरो के बराबर है। अगर आपके पास 99 अवगुण हैं और आप प्रभु से जुड़े हुए हैं, तो ये 100 परसेंट है।*** कैसी बात कर दी! कैसा फार्म्यूला दे दिया! हम जो भी हैं, जैसे भी हैं, अगर गुरुजी से जुड़े रहते हैं तो हमें फिकर ही नहीं रहती, क्योंकि काकाजी ने हमें कहा है कि लाज गुरुजी-दीदी ने रखनी है। तो ये फार्मूले–ये सूत्र काकाजी ने बहुत इज़ीली दे दिए। जगरांव में एक बार एक हरिभक्त ने काकाजी से प्रश्न किया–*काकाजी, आप बाम्बे से चलकर पंजाब (जगरांव) आए, रास्ते में तो कई स्टेशन पड़ते थे।* तो काकाजी ने सरलता से जवाब दिया–*मैं जानता हूँ कि यहां पूर्व के मुक्त रहते हैं।* सो,

पंजाब में उन्होंने बहुत हार्डवर्क किया। उन दिनों रिक्शा में, जीप में, कड़ी धूप में तंग गलियों में पैदल भ्रमण किया और वहां के लोगों को प्रभु के प्रति जागृत किया। 'स्वामिनारायण' के बारे में हम कुछ नहीं जानते थे। काकाजी ने हमें गुरुजी के रूप में गिफ्ट दिया और उनके साथ जोड़ दिया... मैं कभी नहीं कहता काकाजी चले गए। **काकाजी तो हमेशा प्रत्यक्ष हैं। उन्हें बुलाने वाला चाहिए, काकाजी की स्मृति करने वाला चाहिए।** कोई सूक्ष्म और स्थूल शरीर वाली बात ही नहीं है, **उनका सभी तत्त्वों पर अब भी पूरा कंट्रोल है...**

बाम्बे में एक बार कहीं फंक्शन होना था। काकाजी के सेवक जगह देखने के लिए गए। उन्होंने सोचा कि मौसम खराब है, बादल आ गए हैं, तो यहां हो नहीं सकता। काकाजी को सजेशन दिया, लेकिन काकाजी ने कहा यहीं करो। काकाजी तो दिव्य पुरुष थे, प्रभु को धारण किए हुए थे। तो फंक्शन वहीं किया। जब फंक्शन शुरू किया, तो बादल छंट गए। मौसम अच्छा हो गया, फंक्शन अच्छी तरह हुआ। जब फंक्शन बंद हुआ और लोगों ने समेटना शुरू किया, तो मौसम फिर बिगड़ गया–ये हैं काकाजी। तो पंजाब, हरियाणा और दिल्ली वालों को आज गुरुजी मिले हुए हैं। काकाजी मिले हुए हैं। **अगर आज हम यहां हैं तो सिर्फ काकाजी के कारण हैं।** वहां पंजाब में जब कभी भी चार बंदे इकट्ठे होते हैं, तब काकाजी की बात चलती है। कई लोग हैं जो उनका गुणगान करते हैं, भले यहां नहीं आ पाए हों। काकाजी के समय गलियों में, मोहल्लों में जब प्रभात फेरी होती थी, तो भीड़ लग जाती थी। तब इतना पता भी नहीं था कि हम किन के साथ जा रहे हैं!

तो, आज का दिन हमारे लिए बहुत ही पुण्य का दिन है और हमें इस बात का बहुत फक्र है और पूरी निश्चिंतता है कि गुरुजी हमें संभाले हुए हैं। आप सब हरिभक्तों के जो दर्शन हम करते हैं; ये संत नहीं मिलते तो हम कहां से मिल पाते? पंजाब तो वैसे भी और तरह का इलाका था, लेकिन काकाजी ने हमें संभाला। गुरुजी ने हमें संभाला हुआ है। जब हम नहीं आ पाते, तो गुरुजी बड़े चाव से पंजाब में जाते हैं। हम कई बार बात करते हैं कि इतनी आयु के बावजूद ठंड झेलते हुए ये भी बहुत परिश्रम करते हैं। हमें आना हो तो कई बार पूछते हैं कि कैसा मौसम है, क्या है? कितने किलोमीटर है? सीट रिज़र्व हो गई या नहीं? लेकिन, गुरुजी जब आते हैं, तो हमारा हौसला और भी बढ़ जाता है... काकाजी ने जो सिद्धांत दिए हैं, हम कोशिश करते हैं कि उन पर चलें। गुरुजी-दीदी की हम पर पूर्ण कृपा है, पूरी नज़र है। हमारी कोई भी समस्या तुरंत हल हो जाती है। तो, आप सबके दर्शन करके, सब संतों के दर्शन करके, सारे गुणातीत समाज के दर्शन करके आज मैं अहोभाग्य हो गया हूँ और मेरा आप सबके चरणों में जय स्वामिनारायण।

प.भ. चांदप्रकाशजी (दिल्ली)

हज़ारों ख़्वाहिशें ऐसी कि हर ख़्वाहिश पे दम निकले। बहुत निकले मेरे अरमान फिर भी कम निकले॥

ये **गुरुजी काकाजी के खरे आशिक़ हैं...** गुरुजी कोई भी काम करते हैं-कोई कमरा बनवाना हो, कुछ भी बनवाना हो, काकाजी की इजाज़त लिए बग़ैर कुछ नहीं करते। सच्चे आशिक़ हैं। आज कलियुग में हम देखते हैं हर तरफ लड़के-लड़कियाँ खूब इश्क़ करते हैं, लेकिन उनका इश्क़ गुरुजी के इश्क़ के सामने बिल्कुल फीका पड़ जाता है। यह आप सब मेरे साथ एग्री करेंगे। सन् 72 या 73 से मैं गुरुजी से जुड़ा हुआ हूँ। तभी से काकाजी के साथ जुड़ा हूँ। हमारे काकाजी के साथ के प्रसंग मैं बताने लगूं तो बहुत टाइम लगेगा। लेकिन फिर भी बोलने को कहा है तो कहूंगा तो सही। अभी जैसे एक भक्त ने कहा कि काकाजी गए नहीं हैं; यह सही बात है कि **दिल में तस्वीर यार जब भी गर्दन झुकाई देख ली।** काकाजी को याद करो, आपके सामने हैं।

काकाजी का **एक प्रसंग** आपको सुनाता हूँ। छतरपुर में कुछ समय के लिए स्वामिनारायण का मंदिर रहा था। काकाजी ने मुझे आज्ञा की थी कि– *चांद तुम ऐसा करो कि हनुमान दादा की एक मूर्ति वहां पधरानी है,*

आप लाओ। मैं जयपुर से लाया, वहां खूब सत्संग हुआ। सभी हरिभक्त और बहनें सभी वहां पहुंची। हवन, यज्ञ, कीर्तन बहुत कुछ हुआ। इसी दौरान एक हरिभक्त को बिजली का ज़ोरदार करंट लगा। सबको ऐसा लगा कि ये बचेगा नहीं। लेकिन काकाजी के चेहरे पर लेशमात्र भी किसी किस्म की घबराहट नहीं, किसी किस्म की चिंता नहीं। वे कहने लगे–*कुछ नहीं होने वाला सब ठीक है। आप लोग जाओ, अपना काम करो।* तो ऐसे थे काकाजी!

एक **दूसरा प्रसंग**–हमारे एक मिनिस्टर थे श्री एच.के.एल. भगतजी... कुछ लोगों ने साजिश-वाजिश करके ऐसा कुछ प्रपंच रचा कि लगा कि कांग्रेस का आठ-दस करोड़ रुपया भगतजी खा गए हैं। उन दिनों काकाजी छतरपुर आए थे और मेरी दुकान ग्रीन पार्क में थी। काकाजी जब भी छतरपुर जाते थे, तो वापसी में मेरी दुकान पर जरूर आते थे। वहां बैठकर उन्होंने भजन किया और काफी देर भजन करने के बाद, उनके साथ जो भगत आए थे, उन्हें उन्होंने कहा–*तुम अशोकविहार मंदिर जाओ, मैं चांद के घर होकर आता हूँ।* अपनी गाड़ी में काकाजी को बिठा कर बातें करते हुए मैं चल पड़ा। तब भगतजी की बात निकली। मैंने कहा–*काकाजी, भगतजी तो गए।* वे कहने लगे–*क्या हुआ?* मैंने उन्हें सारा किस्सा सुनाया और कहा–*उनकी मिनिस्टरी तो गई।* यह बात करते हुए जनकपुरी मेरे घर पर पहुँच गए। हम हॉल में बैठ कर बातचीत करने लगे। काकाजी का चेहरा एकदम टमाटर की तरह लाल हो गया और मुझसे कहा–*अरे! चांद तू क्या बोलता है?* मैंने कहा–*काकाजी मैं कुछ नहीं बोलता, जो पेपर वाले लिखते हैं या जो टी.वी., रेडियो में सुनता हूँ वो कह रहा हूँ, अपनी तरफ से कुछ नहीं कहता।* काकाजी एकदम बोले–*अरे! कुछ नहीं होने वाला। देखना, ये जो भगतजी हैं स्टेट मिनिस्टर ही नहीं, कैबिनेट मिनिस्टर होंगे।* विश्वास नहीं करेंगे कि हफ्ता भी नहीं बीता और वे स्टेट मिनिस्टर की बजाय कैबिनेट मिनिस्टर बना दिए गए। ये थे काकाजी! तो अब काकाजी की कितनी-कितनी बातें करूँ? मैं खुद एक रोमांटिक आदमी हूँ, टी.वी. आर्टिस्ट रह चुका हूँ। जब काकाजी दिल्ली आते, तो हम उन्हें एयरपोर्ट लेने के लिए जाते थे। एक बार जब काकाजी आए तो मैं पहुंच नहीं सका; क्योंकि उस दिन मेरी शूटिंग थी। मैंने सोचा कि शूटिंग के बाद काकाजी के दर्शन करने अशोकविहार मंदिर जाऊंगा। तब पुराना मंदिर था। शूटिंग के बाद मैं मंदिर गया, काकाजी सोफे पर सामने लेटे हुए थे। मैंने जैसे ही काकाजी के पांव छू कर बोला–*काकाजी, 'जय स्वामिनारायण'।* काकाजी ने एकदम कहा–*सलाम वालेकुम।* मैंने कहा–*जी, वालेकुमस्लाम।* गुरुजी बरामदे में सुन रहे थे कि काकाजी और चांद को क्या हो गया है? सलाम वालेकुम, वालेकुमस्लाम कर रहे हैं। उन्हें नहीं पता था, लेकिन मैं समझ गया कि काकाजी ऐसा क्यों बोल रहे हैं। असल में किस्सा यह था कि जैसे ही हम आकाशवाणी से निकले, तो मेरे साथ एक लड़की थी, वो टागोर पार्क में-मॉडल टाउन के पास रहती थी। उसने कहा–*चांदजी, मुझे ड्रॉप कर दीजिएगा।* मैंने कहा–*हाँ, मैं कर दूंगा क्योंकि मुझे अशोक विहार जाना है।* मैंने जैसे ही उसे ड्रॉप किया, वह कहने लगी–*नहीं, नहीं ऐसा नहीं होगा, आप एक प्याला चाय जरूर पी करके जाइए।* मैंने कहा–*हमारे गुरुजी आए हुए हैं, पहले ही बहुत देर हो चुकी है, फिर कभी चाय पी लूंगा।* उसने कहा–*नहीं, नहीं ये नहीं होगा, चाय जरूर पीनी पड़ेगी।* मैं रुक गया और चाय पी ली। वो लड़की मुसलमान थी। काकाजी ने मुझे ये समझाया कि तू वहां उस मुस्लिम लड़की के साथ चाय पी रहा था और मैं कब से यहाँ बैठा हूँ? तो ऐसे थे, काकाजी–ऐसे दिव्य पुरुष! उन्हें आम कहना वो बहुत गलत बात है, आम आदमी वे थे ही नहीं। इस दुनिया के वे थे ही नहीं। शायद हम लोगों को ही अपना बनाने, संवारने के लिए जन्म लिया हो और आप सबके और मेरे लिए गुरुजी दिए हैं। गुरुजी भी किसी से कोई कम नहीं हैं। गुरुजी से एक दिन मैंने कहा–*गुरुजी मेरी बड़ी इच्छा थी कि मैं इस मंदिर में बहुत बढ़िया से चार एयरकंडिशन्ड रूम बनवाऊँ।* तो, गुरुजी कहने लगे–*कोई बात नहीं, कमरे तो बन गए।* मैंने कहा–*बन तो*

गए, लेकिन मेरा तो इसमें कोई योगदान नहीं है। तो कहते हैं– *आप कमाल की बात कर रहे हो। मैंने भी तो सोचा था कि काकाजी के लिए मैं मंदिर में लिफ्ट लगवाऊँगा। लिफ्ट मैंने लगवाई, लेकिन काकाजी ने तो इस्तेमाल नहीं की न। यूँ आपने संकल्प किया और आपका संकल्प पूरा हो गया! अब तो आप आकर रहते भी हो... जय स्वामिनारायण!*

'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' का बिगुल बज गया!

दि. 12,13 व 14 अगस्त 2013 को पेरिस के प्रांगण में मनाए जा रहे **दिव्य बंधुजोड़ी गुरुहरि काकाजी और गुरुहरि पप्पाजी शताब्दी महोत्सव प्रथम चरण** के अवसर पर सही अर्थ में आत्मीयता एवं दिव्य एकता से जीवन जीने के लिए प्रगट स्वरूपों के श्रीचरणों में अंतर से प्रार्थना करें!

व्रतोत्सवसूची

1. दि.19.7.'13, **शुक्रवार – देवशयनी एकादशी, व्रत – चातुर्मास प्रारंभ**
2. दि.22.7.'13, **सोमवार – गुरुपूर्णिमा**
   (सुबह 8:30 से 10:00 ताड़देव मंदिर में मनाएँगे। जो इस समय न आ पाएँ, वे दिन में किसी भी समय आ करके 'गुरुपूजन' कर सकेंगे।)
3. दि. 2.8.'13, शुक्रवार – एकादशी, व्रत
4. दि. 7.8.'13, बुधवार – श्रावण मास – प्रारंभ
5. दि.15.8.'13, गुरुवार – भारत का स्वातंत्र्य दिन
6. दि.17.8.'13, शनिवार – पवित्रा एकादशी, व्रत
   (ठाकुरजी को पवित्रा के हार पहनाने।)
7. **दि.20.8.'13, मंगलवार – श्रावणी पूर्णिमा – रक्षाबंधन**
   (कृपया ध्यान दें – प.पू. गुरुजी के पेरिस से लौटने के बाद दि. 24.8.'13, शनिवार की सायं 7:00 से 9:00 ताड़देव मंदिर में रक्षाबंधन का पर्व उनकी निश्रा में मनाएँगे।)
8. दि.26.8.'13, सोमवार – रांधण छठ (षष्ठी)
9. दि.27.8.'13, मंगलवार – शीतला सातम (सप्तमी)
10. दि.28.8.'13, बुधवार – **जन्माष्टमी** – व्रत
11. दि. 1.9.'13, रविवार – **ब्रह्मस्वरूप प.पू. पप्पाजी महाराज का प्रागट्य दिन**
    एकादशी, व्रत
12. दि. 5.9.'13, गुरुवार – श्रावण मास – समाप्त
13. **दि. 9.9.'13, सोमवार – गणेश चतुर्थी**
14. दि.15.9.'13, रविवार – जलझीलनी एकादशी – व्रत

'चातुर्मास के नियम'

भगवान और संत की प्रसन्नता हेतु इस चातुर्मास दौरान सभी सत्संगी प.पू. गुरुजी की आज्ञा के मुताबिक निम्न नियमों का पालन करें।

1. सावन के महीने यानि – **7** अगस्त से **5** सितंबर तक एक बारी भोजन लें।
2. **19 जुलाई, शुक्रवार**-नियम की एकादशी
   28 अगस्त, बुधवार- जन्माष्टमी
   15 सितंबर, रविवार-जलझीलनी एकादशी
   13 नवंबर, बुधवार - कार्तिक शुक्ला एकादशी
   इन चारों दिन व्रत रखें।
3. चातुर्मास दौरान यथाशक्ति महापूजा करवाएं।
4. रोज सुबह या सायं '**स्वामिनारायण महामंत्र**' का अजपाजप करते हुए चालीस मिनिट तेज़ वॉकिंग करें।
5. सावन महीने के दौरान '**भगवत् कृपा**' में '**श्रवण, मनन, निदिध्यासन**' के अंतर्गत आए अब तक के मुद्दों में से **10.10 मुद्दों** का नियमित रूप से रोज़ पाठ करते हुए उस पर मनन-चिंतन करें।
6. **चातुर्मास दौरान छोटे-बड़े किसी भी प्रसंग में प्रगट प्रभु को ही कर्ता-हर्ता न मान कर बाह्यदृष्टि रखते हुए वर्ताव कर दिया हो, तो उस दिन नित्य की धुन के अतिरिक्त 'प्रायश्चित् रूप' में 40 मिनिट धुन अधिक करें।**

(Air Mail)
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052